हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण का इतिहास 1950- 2000 (उ0प्र0)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ से
इतिहास विषय में पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांश

शोधार्थी

प्रेटी पुष्कर

नामांकन संख्या 1277/16

शोध निर्देशक

प्रो0 एस0 विक्टर बाबू

प्रोफेसर
इतिहास विभाग

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY

•LUCKNOW•

प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

इतिहास विभाग
स्कूल फॉर अम्बेडकर स्टडीज
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ, 226025 उत्तर प्रदेश

2020

शोध सारांश

हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण का इतिहास 1950– 2000

उ0प्र0

इतिहास जानने के महत्वपूर्ण स्रोतों में एक स्रोत साहित्य भी है। और इतिहास में साहित्य की भूमिका को हम नकार नहीं सकते। बिना साहित्य के इतिहास को हम पूरी तरह से नहीं जान पाएंगे। साहित्य लेखन बहुत प्राचीन समय से ही प्रारंभ हो गया था। जिससे हमें उस समय के सामाजिक जीवन राजनीति और समाज में चल रहे कृतियों के बारे में पता चलता है।

साहित्य मानव मन की अभिव्यक्ति है। साहित्य का सृष्टा समाज का ही एक व्यक्ति होता है साहित्य जिसे हम समाज का प्रतिबिंब कहते हैं। प्रत्येक साहित्यकार अपने जीवन के अनुभवों, सत्य घटनाओं और टूटते बनते जीवन के मूल्यों से ही प्रभावित होकर अपने साहित्य को रूपायित करने का प्रयास करता है। साहित्य से हमें उस समय हो रहे सामाजिक परिवर्तनों और विचारों के बारे में पता चलता है।

उपन्यास, साहित्य की अनेक आधुनिक विधाओं में एक ऐसी विधा है। जिसने जीवन से लगाव के कारण अति शीघ्र लोकप्रियता प्राप्त की है। इसमें मनुष्य और समाज से जुड़ी हुई कई घटनाओं को ऐसे रूप में प्रदर्शित किया गया है। जिससे वे जीवंत हो उठी है। उपन्यास जीवन से और जीवन यथार्थ से जुड़ने वाली एक विधा है। जो इतने सरल रूप से जीवन की विभिन्न जटिलताओं को चित्रित करती है।

उपन्यास शब्द उपन्यास के जोड़ से बना है। 'उप' जिसका अर्थ समीप तथा 'न्यास' जिसका अर्थ पास रखी हुई वस्तु है। इस प्रकार उपन्यास शब्द का अर्थ है समीप रखी हुई वस्तु अर्थात ऐसी कृति जो हमारे जीवन के निकट प्रतीत होती है। नई विधाओं के प्रचलन के कारण अंग्रेजी में इसका नाम नॉवेल या नया पड़ गया। अधिकतर भाषाओं में इसी शब्द का प्रचलन है।

उपन्यास के मुख्य तत्व

- कथानक
- चरित्र
- देशकाल वातावरण
- भाषा शैली

- उद्देश्य

उपन्यास के प्रकार

- सामाजिक उपन्यास
- ऐतिहासिक उपन्यास
- घटनात्मक उपन्यास तिलिस्मी ऐयारी
- घटनात्मक उपन्यास जासूसी
- अनूदित उपन्यास

प्राचीन समय से ही नारी ने विश्व साहित्य में लेखन की प्रतिभा में अपना परिचय दिया है। वैदिक काल के समय से नारी, पुरुष का साहित्य के क्षेत्र में साथ देती आई है। भारतीय नारी भारत में नवजागरण तथा नारी मुक्ति आंदोलनों के परिणामों से बहुत प्रभावित होती रही है। कई महान समाज सुधारको के प्रयासों से भारतीय नारी को शा`षण क` विरुद्ध अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की तत्पर प्रेरणा प्राप्त हा`ती रही है। नारी शोषण भारतीय परिव`श में अनादि काल से चला आ रहा है और इसी शोषण अत्याचार से मुक्ति की आकांक्षा को जन्म देने के लिए ही भारतीय साहित्य में नारी लेखिकाओं का आगमन हुआ है। हिंदी उपन्यास साहित्य आज एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त कर रहा है। जिसमें महिला लेखन एक महत्वपूर्ण और अपनी पहचान बनकर सामने आया है। हिंदी उपन्यास में महिला लेखन ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। स्वतंत्रता के बाद भारत की परिस्थितियों ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जगाया है।

पुरुष वर्चस्व समाज में नारी के अधिकारों के चिंतन को नारी विमर्श कहते हैं। पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे मापदंडों, लिंगभेद तथा स्त्री उत्पीड़न के कारणों को समझने के लिए एक गहरी दृष्टि की आवश्यकता है।

आज के आधुनिक समाज में नारी अपनी पहचान व अस्मिता के प्रति जागरूक हो गई है। बीसवीं सदी के बदलाव को सबसे अधिक नारी ने हीं झेला है। नारी लेखिकाओं ने अपने साहित्य में इन्हीं विषयों का विश्लेषण किया है क्योंकि नारी लेखिका खुद नारी है अतः स्वयं भुक्त भोगी रही हैं। इसलिए उन्होंने अपनी पीड़ा और अपनी समस्याओं को बहुत ही संजीदगी से उपन्यास के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। इसलिए नारी द्वारा रचित नारी संबंधी साहित्य का विवेचन और विश्लेषण बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है।

जैसा कि हमें पता है कि उपन्यास साहित्य का सर्वाधिक प्रचलित विधा है और समाज का आईना होता है स्वतंत्रता के बाद उपन्यासों का मुख्य विषय स्त्री और पुरुष के बीच संबंधों को गहराई से आंकने का प्रयास जारी हो गया था और स्वतंत्रता से उत्पन्न नई सुशिक्षित नारी उपन्यासों का केंद्र पात्र बनने लगी थी स्त्री और पुरुषों के संबंधों में पति–पत्नी

के रूप प्रेमी प्रेमिका के तथा अन्य रूपों को उकेरा जाने लगा नारी जीवन से संबंधित उनके संघर्षरत जीवन को कई महिला लेखिकाओं ने भी अपने उपन्यासों में जगह दी।

साहित्य कई हद तक समाज में हो रहे क्रियाओं पर ही आधारित होता है। परंतु जो जैसा है वैसा दिखाना साहित्य का उद्देश्य नहीं है बल्कि जैसा है उसकी तरह से अपने शब्दों में गढ कर प्रस्तुत करना साहित्य है। साहित्य की एक विशेष धारा उपन्यास को कहा जाता है क्योंकि उपन्यास में आपके आसपास के समाज में आने वाली क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का प्रतिबिंब बन कर सामने आता है।

भारत में स्वतंत्रता एक महत्वपूर्ण कदम था 1947 के बाद भारत बिल्कुल बदल सा गया था। राजतंत्र और गुलामी को जड़ से उखाड़ फेंक कर एक नए गणतंत्र भारत की स्थापना की गई। देश के कई महानुभवों ने देश की आजादी में जो योगदान दिया था, उसे भुलाया नहीं जा सकता। समाज में स्वतंत्रता के पश्चात नए आयामों के अंतर्गत नए देश का उत्थान हो रहा था। इसमें समता, न्याय और बंधुत्व की स्थापना करना एक महत्वपूर्ण कदम की शुरुआत थी। स्वतंत्रता का जितना प्रभाव समाज के अन्य चीजों पर पड़ रहा था उतना ही प्रभाव साहित्य पर भी पड़ना स्वाभाविक ही था। स्वतंत्रता के पश्चात कई उपन्यास व्यक्ति विषयक उपन्यासों की नई शुरुआत के साथ लिखे गए। बाहरी जीवन के साथ–साथ उपन्यासकारों ने अंतर्मुखी व्यक्तित्व को भी उभारना प्रारंभ किया। नर और नारी के प्रति अपने विचारों को खुले रूप से उन्होंने अपने उपन्यासों में जगह दी। कई मनोवैज्ञानिक उपन्यास कारों ने नारी के अंतर्मन में झांकते हुए नारी प्रधान उपन्यासों को लिखा। उसकी समस्याओं को समाज के सम्मुख रखा और कई पहलुओं को दृष्टिगत किया। नई पीढ़ी, नया भारत और नया उपन्यास तेजी से बढ़ रहे थे। जिसके द्वारा उपन्यास कारों ने खुले तौर पर नारी के जीवन को अपने उपन्यासों का मुख्य विषय बनाया। पुरुष उपन्यास कारों ने नारी के उस रूप को प्रदर्शित करने का प्रयास किया जा` वह वास्तविकता में वह जीना चाहती थी।

एक सफल उपन्यासकार हमेशा समाज के शुभचिंतक और पथ प्रदर्शक के रूप में ही अपने को देखता है। इसीलिए कई बार रचनाकारों की रचनाओं में उनके व्यक्तित्व की झलक भी हम देख पाते हैं, तो कभी रचनाकार के रचनाओं में समाज के और जनजीवन में हो रही परिस्थितियों के बदलाव को देखते हैं।

समस्या कथन

हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी को अधिकतर रूढ़ीवादी रूप में चित्रित किया गया है। पितृसत्तात्मक समाज ने उपन्यास साहित्य में नारी के इस प्रतिनिधित्व को प्रभावित किया है। परंतु उपन्यास पर समाज का प्रभाव बहुत अधिक दृष्टिगत होता है। इसलिए उपन्यासों में नारी के परंपरागत चित्रण का प्रभाव कम करके आधुनिक रूप में चित्रण करना प्रारम्भ किया है। कई उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों में नारी के नवीन चित्रणों को दर्शाया है। जिसमें नारी उपन्यास कारों

की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। और नारी द्वारा लिखे गए उपन्यासों में नारी को अधिक सकारात्मक और दृढ़ रूप से चित्रित किया हैं।

अध्ययन का महत्व

साहित्य समाज का दर्पण है। जिसकी विभिन्न शैलियों में उपन्यास एक सशक्त और महत्त्वपूर्ण विधा है। उपन्यास के माध्यम से समाज में अच्छी और बुरी अवस्था पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया जाता है। और विभिन्न उपन्यासकारों द्वारा सामाजिक और नैतिक जैसे विभिन्न मुद्दों को प्रस्तुत किया जाता रहा है। प्राचीन समय से ही नारी का शोषण भी प्रमुख समस्या में से एक रही है। भारतीय समाज में पुरुषों की तुलना में नारी को समाज और परिवार में हमेशा दूसरा ही स्थान प्राप्त हुआ है। भारतीय हिंदी उपन्यासों में उपन्यास कारों द्वारा महिलाओं की स्थिति और चित्रण का अध्ययन करना है।

शोध अध्ययन का क्षेत्र

1950 से 2000 तक उत्तर प्रदेश राज्य में निर्मित हिंदी साहित्य का साहित्यिक आलोचना के साथ विश्लेषण करना। उत्तर प्रदेश भारत के 28 राज्यों में से एक राज्य है इसमें लगभग 20 करोड़ से अधिक जनसंख्या निवास करती है जिसके कारण यह भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है। ब्रिटिश शासन के दौरान 1 अप्रैल 1937 को संयुक्त प्रांत आगरा व अवध के रूप में स्थापित हुआ था ब्रिटिश शासन काल के दौरान इसका नाम यूनाइटेड प्रोविंस था जो कि 1950 में बदलकर उत्तर प्रदेश रख दिया गया था। इसको संक्षिप्त में आम बोलचाल में यूपी कहा जाता है राज्य की प्रशासनिक व विधायिक राजधानी लखनऊ है और न्यायिक राजधानी प्रयागराज है। पूरे प्रदेश को प्रशासनिक तौर पर 18 मंडलों और 75 जिलों में विभाजित किया गया है। राज्य की दो प्रमुख नदियां गंगा और यमुना प्रयागराज में मिलती है। हिंदी राज्य में सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है और यही राज्य की अधिकारिक भाषा भी है उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ है यह राज्य 2,40,928 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है यहां का मुख्य न्यायालय प्रयागराज में स्थित है।

परिकल्पना

1– साहित्य में स्त्रियों को रूढ़िबद्ध धारणा में चित्रित क्यों किया गया है।

2– साहित्य में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में पितृसत्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3– हिंदी साहित्य लैंगिक समानता के नारीवादी विचारों को दर्शाता है।

उद्देश्य

- 1950 के पश्चात उपन्यासों में नारी चित्रण में परिवर्तन।
- यह जानने के लिए कि पुरुष उपन्यासकार अपने उपन्यासों में नारी की स्थिति को कैसे प्रस्तुत करते हैं।
- यह देखने के लिए कि उन उपन्यासों में नारी उपन्यासकार किस तरह अपनी पीड़ा और विरोध को आवाज देती हैं।
- चयनित उपन्यासों में प्रस्तुत नारी की छवि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- नारी के लेखन में भाषा के सामाजिक–सांस्कृतिक पहलू को समझना।
- हिंदी उपन्यासों में नारी के चित्रण के बदलाव पर ध्यान देना।

शोध विधि

यह शोध शाब्दिक, दार्शनिक आलोचना और ऐतिहासिक पद्धति पर आधारित है। जिसमें विश्लेषणात्मक वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत उपन्यास, लेख और पत्रिकाओं का संग्रह एवं अन्य पुस्तकें है।

अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय

शोध प्रबंध में उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण के इतिहास को देखते हुए प्रथम अध्याय में उपन्यास के अर्थ को समझते हुए उपन्यास की विषय वस्तु पर चर्चा की है। उपन्यास के संदर्भ में अनेक विचारको के विचारों को प्रस्तुत किया है। उपन्यासों के प्रकार में नारी चित्रण के महत्व को समझा है इतिहास और साहित्य के संबंध की चर्चा है और उपन्यासों के मुख्य तत्व को बताया गया है।

दूसरा अध्याय

शोध प्रबंध के द्वितीय अध्याय में प्रारंभिक समय से आधुनिक समय तक नारी की स्थिति पर चर्चा की है और नारी के प्रति होने वाले सुधार आंदोलनों को भी रखा है। स्वतंत्रता पूर्व उपन्यास साहित्य में नारी के चित्रण को समझने के लिए 3 चरणों में पाठ को विभाजित किया है। प्रथम चरण 1882 से 1918 तक द्वितीय चरण 1918 से 1936 और तृतीय चरण 1936 से 1950 तक वर्णित है ।

तृतीय अध्याय

शोध प्रबंध के तृतीय अध्याय में 1950 के पश्चात उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण को रखा है। 1950 से पूर्व नारी चित्रण हम दितीय पाठ में कर चुके हैं इसलिए तृतीय पाठ को 1950 से 2000 तक पांच दशकों में विभाजित किया है जिसमें हर दशक में एक नारी उपन्यासकार के एक अति विशिष्ट उपन्यास में नारी चित्रण की चर्चा की है जो की पूरी तरह से नारी प्रधान उपन्यास है उसमें नारी चित्रण और उसकी कहानी को अपने शब्दों द्वारा स्पष्ट किया है ।

चतुर्थ अध्याय

शोध प्रबंध के तृतीय अध्याय में 1950 के पश्चात उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण को रखा है। पिछले अध्याय में नारी उपन्यासकारों के उपन्यासों को स्पष्ट किया था इस अध्याय में पुरुष उपन्यासकारों द्वारा रचित नारी उपन्यासों को स्पष्ट करेंगे। 1950 से 2000 तक पांच दशकों में विभाजित किया है जिसमें हर दशक में एक पुरुष उपन्यासकार के एक अति विशिष्ट उपन्यास में नारी चित्रण की चर्चा की है जिसमें एक उपन्यास जो कि नारी प्रधान उपन्यास है उसको और अधिक सूक्षमता पूर्वक वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय

शोध प्रबंध के पंचम अध्याय मे ंउपन्यास के सर्व प्रमुख तत्व पात्र पर चर्चा की है जिसमें नारी पात्र महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आ रहे हैं। उपन्यास कारों के उपन्यासों में महत्वपूर्ण नारी पात्रों जिसमें पुत्री, मां, पत्नी, प्रेमिका आदि रूपों को स्पष्ट किया है। नारी के विभिन्न बदलते स्वरूपों की चर्चा की है एव ंसमकालीन उपन्यासकार द्वारा कारों द्वारा उपन्यासों में नारी चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन भी किया है।

उपसंहार

उपसंहार में प्रस्तुत अध्ययन उपसंहार में शोध प्रबंध में प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों को संक्षेप में समाहित किया गया है। उपन्यास में हम मानव चरित्र का अध्ययन करते हैं। प्रारंभिक उपन्यासो ंमें चरित्र चित्रण को कोई विशेष महत्व नहीं था। परतुं धीरे धीरे उपन्यास मानव जीवन के अध्ययन की ओर उन्मुख हुआ और आधुनिक उपन्यास में सबसे मुख्य विषय मानव चरित्र का अध्ययन ही बन गया है। मानव के चरित्र का चित्रण करने के लिए उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं और मानव के अंतर्मन को समझ कर अपने उपन्यासो ंकी रचना करते हैं। मानव जीवन को अपने उपन्यासो ंमें महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने के पश्चात कुछ उपन्यासकारो ंका ध्यान नारी जाति की समस्याओं पर पड़ा और उसकी सामाजिक स्थिति पर, जिसके कारण उन्होनें अपने उपन्यासों में नारी का चित्रण प्रारभं किया। नारी से संबंधित उपन्यास प्रारंभिक समय से ही चले आ रहे थे परतुं धीरे–धीरे नारी के चित्रण में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है।